

परुपनिहंछेवेसकमलकोफलकामाक्षपलाहंछतसे॥६५॥अमृतंशीशीरवहिअ
 मृततक्षीरभोजन॥अमृतंपरावतिभाष्याअमृतंवालभाषितं॥६६॥शीशीरकालमा
 आगोअमृतश्चशीरभोजनपनिअमृतहोगराफीअस्तीपनिअमृतहोवालषको
 वचनपनिअमृतहो॥६७॥इदंभाषाकृतानिइतंभक्तुशमाश्रय॥इदंभाचसु
 हलारिइतंभवचनप्रिय॥६८॥आकाशभाषायोगपराक्षमावंतराजाहितकअस्तीप्रिय
 वचनस्तीइलेभहो॥६९॥अदिमांगंगाश्रेष्ठुनारिमापतिव्रताश्रेष्ठुनरुष
 चमृदप्राहेजानांयवनिवृत्ति॥७०॥अदिमांगंगाश्रेष्ठुनारिमापतिव्रताश्रे

५३ वा ॥ ५३ आकाशनिमीतसर्वथोकल्पान् ॥ ५४ ॥ समुद्रावरभूमिषाकातनरक्षका ॥ ५५ ॥
 धनिमित्तसर्वथोशीश्वरिश्रवणारकास्त्रिया ॥ ५५ ॥ समुद्रकोवेष्टितपृथ्वीहोद्यरको
 पष्पारलेवेष्टितपष्पारलिहोरजाकोवेष्टितदेशहोस्त्रिकोवेष्टितवारिहो ॥ ५५ ॥ न
 एहानिमेषकाशनरक्षका ॥ नंदनैववधोवासुशिलानिकिलस्त्रीयो ॥ ५६ ॥ दारकोध
 नकोपष्पारलेक्षाहुदैवशीलवतस्वास्तिलेमात्ररक्षाइंछ ॥ ५६ ॥ नदिपायेतेकूलं ना
 रिपातयेतेकूलं ॥ नारिनांचनदिनांचमच्छेदनालितागति ॥ ५७ ॥ नदिलेआफिरिभक्त
 उछनारिलेआफिरिकूलभक्ताउछेनदिनारिकाइकेवलछ ॥ ५७ ॥ तलपाश्वोस्थितक्षभृतं

५३ वा ॥
 ५३

पाश्वाम्थीतंनृप ॥ नपश्यतिमदान्तोद्यथितोनैवपश्यति ॥ ५८ ॥ नहारेलेआफुनजिक
 कोरक्षसमाउछराजालेआफुनजिककोसेवकनिकोमांदछअत्रिलेआफिनीजिकको
 परुषनिकोमांदछ ॥ ५८ ॥ नैवपश्यतिजातंधोकामाधोनैवपश्यति ॥ पार्थस्थंपरुषंयोपिदे
 दृयतिनशंशय ॥ ५९ ॥ जन्मकोकानुलेपनिदेष्टेनकामानुलेपनिदेष्टेनधनमात्रमुत्पा
 दनभक्त्यालेपनिदेष्टे ॥ ६० ॥ जिर्णमनप्रशश्यतिभार्याचगतेघोवना ॥ राक्षसागतंशूरश
 श्यचगृहमागतं ॥ ६० ॥ अन्नपायाकोपत्तकोनिकोवपसृगयासीस्त्रीनिकोसंगामदीष्ट
 वरआपोकाशूरानिकोअन्नघरमापत्तकोनिको ॥ ६१ ॥ लक्ष्मीलक्षनहीनेचकुलहीने

॥ पुचा ॥
॥ ३ ॥

चक्रल हीने शाखवली ॥ अपत्रे रमते नारि गीरो व प्रतिवासव ॥ १५ ॥ लक्षणा नहु म्या छेडा ॥
कीलक्ष्मी ही नकुल मावसा कि सरस्वति पुरुष रत भया कि अस्त्रि रति इले पर्वत मा
प्रतिपा न्या जस्तो व्यर्थ हो ॥ १६ ॥ यस्य भार्या विरुपाक्षी कस्तुरा कल हृषिप ॥ उत्तरोत्तर
वादि च सा जरा जरा ॥ १७ ॥ जस्की स्त्री भिरुपाक्षि सुसदा कल हता कल हग र्या पुरुषा सि
त उत्तरोत्तर वाद गर्भाति अस्त्री को पुरुष चो डेवदा हंछ ॥ १८ ॥ यस्य भार्या गुरु पा च पीरा
गर्जितं ॥ १९ ॥ यस्य सीदंती गात्राणि पत्नी नीव हि मा गमे ॥ २० ॥ जस्का स्त्री सुंदरी छ पुत्र पत्ने भ
या को मांद छे पीती वचन ले वोला उछत स्त्री पुरुष वृद्धा भया पनि उवा न हंछ ॥ २१ ॥

॥ ग ॥
॥ ३ ॥

वासि जंतु धनं सर्व सुपुत्रे शाकं लंघ था ॥ २२ ॥ एका दृक्ष सा सुगंध फल छर सवै वरा वासा
आउछ सै प सुत्र ले कल को उद्धार गर्छ ॥ २३ ॥ यस्य पुत्रो वशे भया भार्या हं दानु गामि ॥
नि ॥ विभवे छ पि संतुष्टः स्वर्गत स्प मही तसे ॥ २४ ॥ जस्की छोरा करा क मारि वशमा छ
धन पनि छ जत स्त्री स्वर्ग एति हो ॥ २५ ॥ ये पुत्रा स्ने पितुर्वश्या सपिता पस्तु पोषिका ॥
सन्मित्रं यत्र विश्वा स्वस भार्या यत्र निवृति ॥ २६ ॥ गावाका वश सार हन्या जो छ स्व छोरा हो
भंगु मले पाल छ पो सु छत म कनवा वा भंतु जो छे ड विश्वास ग मार हंछ स्वामि पुत्र हो भं
तु आका वशमा जो स्वानि छती अस्त्रि भंगु ॥ २७ ॥ यस्य जीवती जीवति विश्व मित्रा दिवा

॥ ३९ ॥ धवा ॥ सफलं जीवितं तस्य आत्मार्थको न जीवति ॥ १३ ॥ जस्का जिउ दखा लागानि वंध
 जित सकले जिपा को ला ॥ पालन सक छते मनुष्य हो आ फु जिउत को पाल दे ॥
 म ॥ १४ ॥ सजिवि भि गायस्प यप धर्म सजिवति ॥ गरा धर्म विहिन स्प नि सफलं
 स्प जीवितम् ॥ १५ ॥ गरा धर्म हुन्या मनुष्य जिउ दो भंजु गरा पति धर्म पति न हुन्या
 मनुष्य मर्या को हो ॥ १६ ॥ वाचा सरस्वति पश्य नार्था रूपवती तथा ॥ लक्ष्मी स्य ग
 वति चैव सफलं तस्य जिवितम् ॥ १७ ॥ जस्का मनुष्य मारस्वती धर मारा जी स्वास्ति
 छदा न ग न मा मर्थ को लक्ष्मी छत को जि पा को सफल हो ॥ १८ ॥ धर्मार्थ काम मोक्षा

॥ ३९ ॥
 ॥ ३९ ॥

नां पत्ये को पित वि चते ॥ अजारा न सोपि नि र्थं तस्य जिवितं ॥ १९ ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष रती
 चार मा स कै न जु ह्या हुन्या मनुष्य जिवितं ॥ २० ॥ धर्म सस्प विहिन स्प नि सफलं
 म ॥ माले ह कार वस्त्र स्प सयं चैव पजियते ॥ २१ ॥ धर्म अर्थ सत्य न भया काम नुष्य को आयु
 दापो वा च्या गुरो पि युक्ता युक्त वचो पाख्यान वच्यं गुरु गौरवं ॥ २२ ॥ गरा का कुरा जा शत्रु
 को पनि गनु हुं छ दोष का कुरा ता गुण को पनि गनु हुं दे न ॥ २३ ॥ लोक पृथु ति मेवार्ता
 शरि र कुशल जग ॥ कतः कुशल मस्मा क मा पुर्जा ति दिने दनै ॥ २४ ॥ संसार लोक जी पछ
 ति मि कुशल छे भछ अ हो प्रा नि क न कया कुशल छ दिन २ आयु छट दो जा छ ॥ २५ ॥

॥ १ ॥
॥ ४० ॥

अकर्तव्यं न कर्तव्यं प्राणैः कंठगतेऽपि ॥ कर्तव्यं मेव कर्तव्यं प्राणैः कंठगतेऽपि ॥ १०० ॥ ३
ती श्रीचानके श्रमसंगेहे द्वितीयसमाप्तम् ॥ २ ॥ नगर्तकाममानुषा पनितगर्तकाम
प्राणसु चापनिगर्ततम अर्थकर्तव्यनगर्त ॥ १०० ॥ श्रि श्रीचानकंताससंगेहे द्वितीयकं
समाप्तम् ॥ १ ॥ कालेचस्तिपरासंधिकालेचमित्रविणह ॥ कार्यकासासाश्रित्यकालंश
पतिपंडित ॥ १ ॥ केनाहेरिद्विहितपनिमिलनपद्येताहेरिमित्रसितपनिविशेषगुरुप
थकार्यकोहेतुवृत्तिनिहसमपयाकादृष्ट ॥ १ ॥ कालः पचति भूतानिकालसंज्ञते
प्रजा ॥ कालसु प्रजागतिः काकोहिदुरतिक्रम ॥ २ ॥ काललेखशिपकाउद्यकाललेखजाह

॥ १ ॥
॥ ४० ॥

धपनि सर्वत्र हंतेन श्रीरुडपनिसर्वैवतमाहंतेन ॥ ११ ॥ परकार्येषु प्रजाभास्वकार्य
क्षिप्रसाधयत ॥ १ ॥ सुहकार्येषु निवृत्तिराजाकार्येषु विक्रम ॥ २० ॥ अर्काकाकार्यमाजु
किगनुआक्राकार्यचाडेसाधुमित्रकोकार्यमात्रनभनगर्तराजाकोकार्यमापरा
क्रमगनु ॥ १० ॥ प्याकोलपेचनिचानायकातंत्रदृश्यते ॥ अचलचापिसाधूनाशिला
लेखिवतिदृति ॥ २१ ॥ नीचालेगयाकोकासपानिमानप्याकोजस्तेअचलछस्थि
रुक्ताधुलेगयाकोकामंभुगाभालेगयाजस्तेअचलछ ॥ २१ ॥ सहतामापदः सति ॥
महातामेवसम्पदः ॥ ३ ॥ इतरपुमनुष्येषुनापदोनेवसंपदे ॥ २२ ॥ वडामनुष्यकनआ

॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥

पदापनिष्ठैश्च येपनिष्ठं ह्युत्तरं भस्मपकन आपदापनिष्ठैश्च येपनिष्ठं ह्युत्तरं ॥ २२ ॥
श्रीभस्मपतिचाव्यावस्त्रशेषाचंडमा ॥ विष्णुस्मरणासात्रेणामहात्मकरसंयुतं
॥ २३ ॥ अर्कपत्रलेन महादवसंती पदं ह्युत्तरं शेषलं चंडमासगृहं ह्युत्तरं विष्णुस्मरणागारि
संयुतं ह्युत्तरं चंडमासगृहं ह्युत्तरं शेषलं चंडमासगृहं ह्युत्तरं विष्णुस्मरणागारि
सर्वेषां सति नो मुक्ताः क्रियावंतश्च पंडिता ॥ २४ ॥ लेखन्या पाठगर्वाशास्त्रपत्न्या
सिमानि सार्वभूतजोऽश्वाको भावनागर्वाशानिहृत ॥ २४ ॥ धानिज्य अश्वकारिज्य
॥ राजसेवार्पोवनं ॥ धीराश्चत्वारिंशत्कर्त्तव्यं तिराहका ॥ २५ ॥ धीराकोष

॥ ५९ ॥

॥ ६० ॥

पारा राजाकोवसेवा पत्न्या ज्ञानिपुरुषकपत्न्याथीमाना श्रीरूपजिषजेत ॥ २५ ॥ धने
धनार्थी वारिज्यं विद्यार्थी च वहुश्रुतं कलुकोलपत्न्याथीमाना श्रीरूपजिषजेत
२६ धनकोऽश्वागर्वालेन पारमर्तविद्याकोऽश्वागर्वालेन प्रतुदानपंडितश्चेज्जान
पुत्रकोऽश्वागर्वालेन प्रतुदानदिनुमानकोऽश्वागर्वालेन राजाकोऽसेवागर्वा ॥ २६ ॥
शुखं पद्मदलाकारं वाचा च दनशीतलं ॥ हृदये कतसंयुक्तत्रिविधधूर्ततक्षणम् ॥ ३ ॥
कमलकापूलजस्रोभस्मावचनभक्त्या श्रीरवंजसोऽशीतलश्च हृदयमाभक्त्या कपटश्च
नितिनधूर्तकालक्षणाहृत ॥ ३ ॥ इज्जनिप्रियवादिचिद्विश्वासनैवकारयेत् नधूश्चरति

७८५॥ जिह्वा प्रेहृदिहालाहर्नविषा **२४॥** इजर्गमनुषोसितसिश्वासनगर्जुकिनभन्याजि **॥**
॥४५॥ आमाअनृतेवेदमाभन्याविवहंछ **॥२४॥** खरसपपमात्राणिपरिच्छिद्राणिप **॥**
 श्रपति **॥** आत्मगविल्लमात्रंतीपश्रपत्यइनप्रश्रपति **॥२५॥** इजनहर्हअर्काको **॥**
 दोषसंस्पृष्टमाराकाभयापनिदेषच्छक्रआकुदेाषभन्यावेसजत्रोभयाप **॥**
 निदेषदेन **॥२६॥** दर्शनिग्राश्रयेभूर्वाधनवंतश्चीतिगुराह **॥** थापिहिदृश्य **॥**
 तेकीभुकाश्चपुष्पिका **॥३०॥** धनभयापनिभूर्वरनिगुराकोशोभावकस्तो **॥**
 हर्कभन्यापलासकोफलफल्पाजस्तोहो **॥३०॥** मूर्खोपिपरिहृतमप्रत्यक्षोहि

७८५॥
॥४५॥

पदापशु **॥** भिसवेवावपशलेनअदृष्टकंटपथा **॥३१॥** मूर्खकनक्षदिडिनुकीन **॥**
 भयाडुइसदाकोपशुहोवचनभन्यागजस्तोगोशमाभिज्याकाकाठाजस्तो **॥**
 रिकलुनहुन्या **॥३१॥** सर्पकुररकःकूर्खारकृतःखरः **॥** तत्रोपधिबशसपख **॥**
 रकेनोपशाम्यति **॥३२॥** सपपनिकूरमूर्खपनिकूरमूर्खभंडासर्पनिकोकेन **॥**
 भन्यासर्पतामंत्रलंखश्रपहुंछमूर्खताकेहिलेपनिवश्रपहुंदेन **॥३२॥** हस्तिह **॥**
 जसहस्तेराशतहस्तेनवाजितम् **॥** श्रुतिनोदशहस्तेनदेशायागेनइजना **॥**
३३॥ हस्तिदेपिहजारहातदाठारहनुघोडदेपिशभहातयठारहचुसिगूहन्वा

॥४८॥

दोषदशहातटाकारहनुर्जनवेदोषदेशोत्पातागर्जप ॥३३॥ हस्तिनोऽशहसे-
नकसहस्रेनवाजिना ॥३४॥ गिनंगडहस्तेनखड्गहस्तेनर्जन ॥३५॥ हस्तिकनअं
कुशदेष्टाडनुघोडाकनकोर्दादेष्टाडनुसिडहन्पाकनलौदोदेष्टाडनुर्जन ॥
कनसडदेष्टाडनुपद्य ॥३६॥ परिहन्नेकशात्रेनालकगोपिगन ॥ मलिना ॥
भूषितंसर्पः किमः शोभपकोपाशनपनुडलासि ॥३७॥ शास्त्रपद्याकाभया
पनिर्जनकोपाशनपनु मणिमर्पकोपाशनगर्जडाताडेड ॥३८॥ पात्रा
पात्रविशेषगाधेनुपन्नगघोरपि तृणांनिश्रवतेशीरक्षीरांनिश्रवतेविप ॥३९॥

॥४९॥
॥४८॥

पात्रकपात्रकोविचारगाईसर्पमेहोघरमदिकनगाडलेडहाकनसर्पलेविषदिन्ध
॥४०॥ शडभूडमितिजात्वानोपेक्षकदाचन ॥ कालर्जनमायातेतुनस्थंविज
वत ॥४१॥ शत्रुसालुभनिअनादरनंगर्जऔसरपातिनाशगहनकसोभत्पासु
काकोघासमलसाथैरेआगोलेपनिमलकछतसे ॥४२॥ पष्टिकेकरदोषोरा
अतिश्मथपिंगले ॥ शतंकानेचपोडेचकुज्रपातंनविघते ॥४३॥ डेलाछेडसाहिदे
पहुंछकैलाजुगाछुडरुं होछहुंछकानाघोरडाछेडहजारदोषहुंछकुम्भा
छेडदोषअसंवेद्य ॥४४॥ नुडनैवमृडहंतिमृडनाहतिशरुणाम् ॥ नामाध्यमडना

॥ ५८ ॥ किंचित्पातिकातरोमृ **॥ ५९ ॥** जो कमल छत माल ह को नाश गच्छ कलाले न
॥ ६० ॥ शय्या को केहि छैन **॥ ६१ ॥** वने खज्वलितो वहिद ह नमूलानि रक्षति **॥** ममूल सुमूल य
 तिचा पोचो मृदु शीतल **॥ ६० ॥** वन मा आगो लाग्या पीछे रूप को जरो हं छपातिले
 तातै रूद्रात उपेलिले जां छत स अर्थ कवला दे पिडरा डनु पछ **॥ ६० ॥** स्थूल रोमा
 वलिव द्रव कन्या च वहु भाषिणि **॥** कषण निचक्षेत्राणि हरतः परिवर्जयत **॥ ६१ ॥** दुला
 रो भया को गो रुद्राड हाडन्या स्वास्तिकि रोला न्या पेत रगति ता ठे दे पिछो डनु **॥ ६१ ॥**

॥ ५८ ॥
॥ ६० ॥

हस्य भेद पैशून्यं परदोषा मुक्तिर्जन **॥** कलहः प्रकृति चैव हरतः परिवर्जयत **॥ ६२ ॥** गुप्त कुराथ
 तादगम्या अर्का कोच कलिगन्या रिसा हये स्ना कनटा ठे धपा डनु पछ **॥ ६२ ॥** अश्व भुक्त
 गजो संत्रगावश्चैव प्रसूतिका **॥** अर्थ यांतः परोदासि हरतः परिवर्जयत **॥ ६३ ॥** घास पा
 इव स्या का घोडा वहु लाया को हाति वेसा स्त्री मुख क्यारि गा इद्वार का केटि सति टा
 ठे वाट धपा डनु **॥ ६३ ॥** नवं सदा मित्र परस्वामि रता स्त्रिय **॥** गो जिर्गा वस्त्र जीन च हरतः
 परिवर्जयेत् **॥ ६४ ॥** न विश्वा मिमित्र पर प्रसित पत्न्या स्वास्तिका घा कालु गा मुडि गा इ

॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥

एतद्योहैवारद्योऽनु ॥ ५८ ॥ ज्ञानविश्वमित्रमेमित्रमपि न विश्वासेत् कदाचित्कु
पितो मित्रसर्वगुह्यप्रकाशयत् ॥ ५९ ॥ शत्रुशितविश्वासनगर्जमित्रसितपानिविश्वा
मानगर्जकदाचित्मित्ररिसायापच्छिप्रकागर्जा ॥ ६० ॥ न विश्वसेद्विश्वासेनैव विश्व
सेत् ॥ विश्वासाद्द्वयमुत्पन्नमूलान्यपि निष्कृतानि ॥ ६१ ॥ अविशिष्टेऽविश्वासनगर्ज
किनभन्याविश्वासभयउपश्रितं ॥ ६२ ॥ नदिनाचनखीनांचशृगिनाशस्त्रपाणि
नाम् ॥ विश्वासं नैव कर्तव्यं सिद्धराजकुलेंद्र ॥ ६३ ॥ नदिसितखोलासिततरवारका
दिहीऽन्याहितविरामितविश्वासनगर्ज ॥ ६४ ॥ नदितिस्पृष्टेऽप्यपचिनादिद्वको

॥ ५९ ॥

६६

६५ ॥ सांमतहि तो राजान भवन्ती चिरायुषः ॥ ६६ ॥ नदिकातीरकोटक्ष आधारनभन्या
की अस्त्री मन्त्री नभया को राजा ठेरे वाचूदेन ॥ ६७ ॥ यदि च्छाश्वतं घीतिस्त्रीरा
तन्ननकारयेत् ॥ घृतमथं यो गंचपरोक्षदरदर्शनं ॥ ६८ ॥ ठेरे संमघीतिरहोस
भंन्यालोतेन्यथा कनेगर्जनुवानपेलनुदामनलाऽनुसास्त्रिसितसंकातनवस्तु
॥ ६९ ॥ नगाद्येऽसु विश्वासं न कर्षाच्छलविग्रहम् आत्मनोपितथाक्रोधं मित्र
वैरिनकारयत् ॥ ७० ॥ इष्टसंगविश्वासगर्जच्छलसेरुगज्ञानगर्जनुवारिसाहानु
हुतमित्रसंगवैद्याश्चनगर्ज ॥ ७१ ॥ कनंयमन्त्रिगजातं विपचवियविपलीपती

॥४८॥

॥४९॥

पुर्वजितं वतः स्रष्टुमेधंति सदा सुधैः ॥५१॥ अन्यापराजा वेशपाको पोद्भवा
सुगाः वतभंगसंन्यासि रतिकोसेवानगर्तु ॥५१॥ कुमंत्रौ नास्ति विश्वासं ॥
कुभार्याणां क्रुदो रती ॥ कुराज्य नास्ति नीवति क्रुदेशे नास्ति जीवितम् ॥५२॥
कुमंत्रक्षडविश्वासं हुंदैन कुस्त्री सीतरती हुंदैन कुराज्य माहति हुंदैन म
तुवालले इष्टराष्टे न जुवाया छेड संग योति नै छैन ॥५२॥ नास्ति सत्यं ॥
सद्य चौर नासौ च हर्षा लोपतो ॥ मयपे सुहृतं नास्ति घृतकासे त्रयं नही ॥
॥५३॥ चोर छेड डपा हुंदैन कुस्त्री सीतरती हुंदैन कुराज्य माहति हुंदैन म

॥५१॥

॥५२॥

तुवालले इष्टराष्टे न जुवाया छेड संग योति नै छैन ॥५३॥ द्वौ विप्रौ विप्रमग्निं च
दंपत्यो गुरुशिष्यौ ॥ अनंतरं नैव कर्तव्यं दहस्पृहपभस्य च ॥५४॥ इष्टास्त्राणा
काडालुगा अग्नीका गुरुशिखेका माहो देवका वसाहाका रतिकामा रुवाटन
जानु ॥५४॥ लोक पात्रा भयलज्जा दक्षिणपंथा गशीतला ॥ पंचपत्रनी विद्यन्ते
न कर्ण्य तत्र संहति ॥५५॥ लोक पात्रा भयलज्जा तपस्या त्यागी रतिनभया
कोदेश मानवस्त्रि ॥५५॥ नाजनं शुक्लता पांती नैव कन्य वरु श्रुतम् ॥ नश
रास्थि र्वृद्धि स्थान्म सूर्य मरुत वदेत् ॥५६॥ गाजलसेतो हुंदैन शास्त्र

॥ वचा ॥
॥ ५० ॥

जान्या छे उ क प ट रु दे न चा स्त्री छे उ स्थि खि हं द मूर्त्त सं र क्त वो ल दे न ॥ ५६ ॥
मरा शो षे ग्नि शो ष थ वा धि शो ष स थै व च ॥ प न र्व द्र यो त त स्मा त स्म शो ष न क
ये त ॥ ५७ ॥ मरा शो ष न रा ष न अ ग्नी शो ष प नि न रा ष र्ज वि धि शो ष न रा ष क स्तो
भ न्पा शो ष रा ष पा ष छि फे रि वि ठि आ ड छ ॥ ५८ ॥ उ द्दे गः क ल रु कं द छू त म थं प रि सि
य ॥ प रि हं स प ग रु स्था ने य न तः प रि क र्ज ये त ॥ ५९ ॥ प र स्त्री प र ध न अ र्का को चो क्ति
ग रु छे ड हं स प र ति छे ड न ॥ ६० ॥ पे रा क्ष या र्प हं तां स प र क्षे प्रि य वा दि न ॥ क र्ज ये
ता द शं मि त्र वि ष क भ प यो मुखं ॥ ६१ ॥ पि ठि या प रि वि ना त्वा र्प मि त्र छे डि दि न यो

॥ गुरु ॥
॥ ५० ॥

क र तो भ न्पा वि ष का च डा मा थि ड द हा ल्पा ज लो हो ॥ ६२ ॥ कुं द शं च क रु ति च क भा
प र क ल दि न्ना था ॥ क र्मा ज्मं च क ड यं व र्ज ये त य जि त स दा ॥ ६३ ॥ कुं द श मा ज्ञा न ॥
भ यो क रु ति ग र्ज भ यो का म क च स्त्रि सं ग व स स्त्री मा ज्ञा न भ यो क रु ति ग र्ज भ यो
क अ न्न र्प ति ज्ञा न दि छे ड न प र ॥ ६४ ॥ उ र्व शी य दि रु पे न रं भा ति लो त मा ॥
ग व पा लि नी को चै व र्ज नि या प छि स्त्री य ॥ ६५ ॥ उ र्व शी रं भा ति लो त मा गो पा
ली मे नि का अ प र ज स्त्री रा षी भ पा प नि प र वि छे ड न ॥ ६६ ॥ भ क्ता भ क्त स मं
प रू पे त्का पा र्का र्प च त्प न स दा का र्प ष सं दे हो भ त व स र्व दा व द्ध ॥ ६७ ॥ यो

॥ उवा ॥ मन्त्रायोक्तमया ॥ अकोमभनिनजात्यामसदाकामसादेहमान्पासता ॥
॥ ५१ ॥ कन्यानीलेद्योडु ॥ ६२ ॥ भगवत्ज्ञानशक्रुनांस्तथापूर्वापकरिवं ॥ भेतव्यं ॥
 मकुलीनानाराजापरोजिविना ॥ ६३ ॥ अकनीदेषिराजादेषिजनिशत्रुदेषिरति ॥
 सितडराडुपद्य ॥ ६४ ॥ पादपानां भयंवातपमानां शशिगोभयं ॥ पर्वताभा ॥
 भयावज्जो जंतूनां दिपदोभयं ॥ ६५ ॥ रुषकनवाएकाभयाद्यकमलकनजुसा ॥
 रकाभयहंष्टपर्वतकनचक्रकोभयष्टजंतुकनमनुष्यकोभयनष्ट ॥ ६६ ॥
 मातायदि विषंदयातिताविक्रियतेसुखं ॥ राजाकरोति चोभ्यापंकोमेवताभ

॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥

छवसिष्टकलेदग्नदिपापनीसितालेदुःखपापा ॥ ७० ॥ सानुकलेभवे
 तस्मिंदोषोपिशरासंदती ॥ शरोपि दोषयंतिवक्रिभूतेविधातरी
 ॥ ७१ ॥ सानुकलेवेशकंदादोषपनीशराकंष्टविधातावक्रहंदाशु
 रापनीदोषकंष्ट ॥ ७२ ॥ किं करोति तारप्राज्ञः प्रेक्षमानश्चकर्मरा
 ॥ प्रायेराहिमनुष्यानां वृद्धि कर्मानुसारीणी ॥ ७३ ॥ ज्ञानिभयेरप
 निवपालाश्चकर्मराकिं वृद्धिहंष्ट ॥ ७४ ॥ संपत्सुसहतांचितं भवेत्तत्पलको
 मलं ॥ आपत्सुचमहाशैलशिलामघातकर्कशं ॥ ७५ ॥ वडस्पुरुषकोचित्र

५३ कस्तोइंछ भन्पावडासंपनिइंछमांकमलजस्तोकोमलइंछसैवेदेपिदपाइं
 छसंपतिमापथरजस्तोसाहोइंछ ७३ हस्तस्यभूषनंदानंसत्पकंठस्य
 भूषणां श्रुतंचभूषणांकाराभूषणोःकीप्रयोजनं ७४ हातकोगहनादानहो
 कंठकोगहनासत्पहोकागहनाकथासुनअरुगहनाकोव्याप्रयोजनछ
 ७४ चस्त्रिंभूषणांस्त्रीनांदुमाणांप्रभूषणाम् स्वयत्त्रिभूषणांप्रसांपती
 नाभूषांकुपो ७५ स्त्रीकोगहनाथनक्षत्रभूषणांचडनारिगाभूषणांपति
 राजाकोगहनाकपाहो ७५ नक्षत्रभूषणांचदुगागिरिभूषणांपति पृथ्वीभू

७५
 ५३

षणांराज्ञश्रीलंसर्वत्रभूषणां ७६ ताराकोगहनाचंडमास्त्रीकोगहनास्वामि
 मृध्वीकोगहनाराजासर्वकोहुगहनाशीलहोस्वभावहो ७६ महतापरि
 भवंश्रष्टोननिचामानसुतम् ७७ कंसारिपादघातेनकालिपरपविभूषणम्
 ७७ इलोछेडअपमानभयाकोपनिनिकोनिचालेमानगयापनिननीको
 कीनभया श्रीकृष्णकापालिकासीनारामथनगर्दाकालिनागकनगह
 नाशोभयो ७७ भूचिभूमिगांततोपंशुचिगरिपतिव्रता ७८ भूमिमाययाकोपानिशुचिपतिव्रतास्त्रीशु

पचा

५४

चिह्नमावंतराजाशुचिसतापिब्राह्मणाशुचि ७८ शुचिभूमिगतगोपंयत्रले
पोतविते पलस्थानंशुचिशुचि ७९ लिप्ताकोनभयपनिपानिभयाको
भूमिशुचीतसअर्थपादेशकोभूमिशुचि ७९ नरमनाशुद्धांतेकांस्वाता
प्रह्लेनशुद्धास्ति रजसाशुद्धांतेगारिगदिवेगनशुद्धहंछ ८० परामिलको
अमिलालेशुद्धहंछरजस्वलाभयाकीनारिशुद्धवेगलेगयाकोमाशुहापाप
छीशुद्ध ८० परदद्यायितुरांतमातदद्यान्महानसं पोषआत्मसमदद्या
नृचयमेवकृषिउज्जन् ८१ वायलेअंतद्यापितआमालेभानसार्दिछगाइ

गुरु
५४

लेभानआफसमर्दिछआफलेकमाइगरिधान ८१ कपिलाक्षीरणनेनद्याच
गीगमनेनच ८२ वेदाक्षरविचारेगासभूडोनरकंषजेत ८२ कपिलगाइकोडुदषा
न्यावसुनीगभनगन्यावेदकोचर्चागन्याभूडनर्कजांछ ८२ इषुधुगित्यसंतु
सूक्रोर्ध्वनीतित्यशंकीन ८३ परभाग्योपजिवीचषडेतेमाइरवभाणिनं ८३ स
वैसितइदपागन्यादपानहन्याअसंतोषिकेधिसर्वत्रसक्यमान्यापराइका
भागेलेजिनंडन्याइछकडाडुवीहु ८३ भूडहलेनपोभक्तेमासमेकंनि
रंतर ८४ जिविमानोभवेच्छूडोमृतश्चानश्वजापते ८४ वाहनलेभूडकाहात

उचा

५५

वाट १ मैक्रापपापछि जिपासं मभूड हो भन्या पछि ककरहंछ ८४ जनहि
नासुपानरि छतहि नंत भाजनं वस्त्रिहिनमलंकारविद्याही नंदिजोतम
८५ एतहि नसुत्पा अस्त्री द्युत हीन भयाको भोजन वस्त्रिहिन को गहना वि
द्याही न भयाको वासना एति शोभा हुंदैन ८५ वासनसलिले पमं शोभते
बालगोतपः स्वभतेतपसा पुको वराभूरश्च शोभते ८६ जलमाकलले
स्वभाहुंछ ज्ञानीमातस्याले शोभाहुंछ बालगोतमापनितपस्यालपम
ऊछ भूरोल डाइना स्वभाहुंछ ८६ शासवंच विप्राणां मर्षाणां कल

५५

५५

होसवं ॥ पुरुषोत्तमवंच नारिणां गवाहनोत्सवम् ॥ ८७ ॥ वासनको फल अमी
मूर्खको इच्छा कल हजरु स्वान्निको इच्छा स्वामि गोइछा कमलो घास ॥ ८७ ॥
अग्नीहीत्रफलं वशील कृत्रि फल श्रुतम् ॥ एति पुत्र फला नारि इत भुक्त फ
लं धनम् ॥ ८८ ॥ वेदको फल अग्नीहीत्र हुनू परासुं न्याको फल शीलिवंत ह
नूस्त्री संभोग गत्याको फल पुत्र हो धनको फल धानुदिन ॥ ८८ ॥ अग्नीदहति
तापन सूर्यो दिहति रश्मि ॥ राजा दहति दरोड नत पसा बालनोदहेत ॥ ८९ ॥ आ
गाकाता पले पोखर सूर्यो काकि राते पनि पोखर राजा ले दले पोखर ॥

५८
५८

८९ सनशाकभृजंमांसकोनमथितदधिः दंतधावनतजन्पातुत्पंगोमांसभ
क्षरां ९० नालुकोडुप्योमयाकोमासुहातलेमथाकोदहितर्जनीलेदान
घाटभनेयोगोमांसतुत्पच्छ ९० नहन्पानमतिदद्याद्रूपमानंनद्विजे त्रय
शंकापरित्यज्यभक्षेमासंपुद्धिश्चिरः ९१ आफलेकाटुनैरेक्चनदिसप
निष्ठेनहेनपनिष्ठेनसतिगारिमासुषापाकोपापेष्ठेन ९१ नमासंभक्षरो
दोषनंमपनचमैथुनं प्रवृत्तिरेवभूजानांनिरुतिरामहाफलम् ९२ मासु
षापाकोमदपिपाकोमेथुनगयाकोपापेष्ठेनपरशुष्टोद्यावडेप्ररोपच्छ

५८
५८

१९२ चतुःसागपर्यन्तंपोदघातृर्धमिमाम् ॥ नरवाटेचापिपोमांसंतुत्पं
मेतद्विउर्वधाः १९३ जोमासुषावेनसौमसुजातपृथ्वीरानगयाकोपराप
पाउला १९३ आनीरापःस्त्रियोमूर्खसपराजकलानिच ॥ नित्यमेवोप
चारेनसद्यःप्रागाहरानिषद् १९४ ओगोपानिअस्त्रीमूर्खशर्पराजइन
लेसदाउपचारगिरिप्रागाहरागच्छ १९४ शुक्कमासंस्त्रियोवृद्धावाला
कस्तूरुगोदधि ॥ प्रभातेनैथुनंनिडासद्यःप्रागाहरानिषद् १९५ सुखा
कोमासुवाठिस्त्रास्त्रिविहानकाघम्मश्वालोदधिविहानकोमेथुन

पचा

५

विहानकोनिडासतिचोडेपानह्राउंछ ९५ सद्यसासंघुतंसचवालाभी
क्षीरभोजनम्-उहोदकंतरुष्टायामघःपाराह्रागिषद् ९६ आलु
मासुघिउरुगिस्वास्तीइदभातरुषकोष्टापातातोपानीसतिचोडेपान
नवधाउछ ९६ अनांदष्टगणंपुष्टपुष्टपुष्टगणाय यपस्वष्टगणं
माममासादष्टगणंघृतं ९७ अचवाहिआठगणान्नदेष्टाउर्नआ
रुगणारोठिदेष्टिआठगुनउददहीदेष्टिआठगणामासुष्टदेष्टिआठग
नघिउ ९७ पंचक्षिप्रविनश्यतिस्तश्चालुप्रश्वयानर अभीमानि

५५
५

चतामीचगुरुदेष्टिस्तथैवच ९८ सतिपाचजनाकोचोडेनाशहंछअ
अतीलोभिअभिमानिअहंकारिछिनायागुरुदेष्टि ९८ गोभिर्विघ्नेश्च
सत्यवादीभि अलुघोदानशीलैश्चसप्तभिधार्पतेमही ९९ गाइवासून
सतिसत्यवादिदेष्टुअलोभिदातासतिलेपृथ्वीधारनागरिराष्पाकोछ
९९ असारेपलुसंसारेसारमेतच्चुष्टयं कास्यावाससतासंगो गंगाभशं
अपजनं ३०० शतिचानकेतुतांयसमाप्नम् ३ ससुअसारसंसारमासा
रभन्पाकोचारथोकछकाशीवासभीमहर्देवपजागर्तसाधुसंगवरुगगा

पचा
५८

जनपीडनमतिगारह ॥ ३०० ॥ इति श्रीचामुण्डासंज्ञेयव्यासक
मुख्यमाह्वय ॥ ३५ ॥ ॐ ॥ इति सप्तमः पर्वः साक्षिमिति ज्ञेयश्चुदि १३०
ज ॥ ३५ ॥ ॐ ॥ प्रदुतायास्तु कमाद्गुभाजुर्नचोपजुलं ॥ ३५ ॥ ॐ

१०

धर
१४

आशा नरकवाशि
2402 I
ASHA ARCHIVES